भोलाराम का जीव

जीवन परिचय

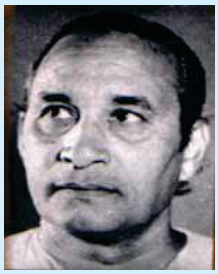

हरिशंकर परसाई

हरिशंकर परसाई का जन्म मध्यप्रदेश के इटारसी के पास जमानी नामक ग्राम में 22 अगस्त सन् 1924 ई. को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही हुई। उच्च शिक्षा के लिए ये इटारसी और नागपुर गए। बाल्यावस्था से ही कला एवं साहित्य के प्रति इनका गहरा लगाव था।

परसाई जी मुख्यत: व्यंग्य लेखक थे। इन्होनें व्यंग्य साहित्य को नई दिशा दी। आपके व्यंग्य समाज की कुत्सित मनोवृत्ति को उजागर कर सामाजिक नैतिकता की चीर-फाड़ करते हैं। साथ ही समकालीन राजनीति की विसंगति व विद्रूपता पर तीखी चोट करते हैं। वे सुधारने के लिए नहीं बल्कि परिवर्तन की चेतना उत्पन्न करने के लिए लिखते हैं।

इस महान व्यंग्यकार का निधन 10 अगस्त सन् 1995 को हुआ।

इनकी 'तबकी बात और थी', 'भूत के पाँव पीछे', 'बेईमानी की परत' 'पगडंडियों का जमाना', 'सदाचार का ताबीज', 'शिकायत मुझे भी है', 'और अंत में', 'रानी नागफनी

केन्द्रीय भाव :- 'भोलाराम का जीव' वर्तमान भ्रष्टाचार पर एक सटीक व्यंग्य है। प्रस्तुत व्यंग्य में पौराणिक प्रतीकों का अवलम्बन लेते हुए भोलाराम नामक एक साधारण व्यक्ति की, सेवा निवृत्ति के पश्चात् आने वाली समस्याओं का व्यंग्यात्मक चित्रण है। समय पर पेंशन न मिलने के कारण भोलाराम की जीवात्मा मरने के पश्चात् भी पेंशन प्रकरण से सम्बन्धित कागजों में अटकी है। उसकी आत्मा पेंशन प्रकरण के निराकरण हुए बिना स्वर्ग भी जाना नहीं चाहती । व्यंग्य अत्यंत मार्मिक है तथा हृदय में करुणा उत्पन्न करता है। परसाई जी ने इस व्यंग्य के माध्यम से नौकरशाही, लालफीताशाही, घूसखोरी तथा प्रशासकीय लेटलतीफी की ज्वलंत समस्याओं पर करारा प्रहार किया है। व्यंग्य में पैनेपन के साथ - साथ शिष्ट हास्य का भी समावेश है तथा वर्तमान व्यवस्था के अन्य पक्षों को छुआ है। व्यंग्य भ्रष्ट तथा असंवेदनशील व्यवस्था की ओर सहज रूप से ध्यान आकर्षित करता है। व्यंग्य का उद्देश्य मात्र त्रुटियों को उजागर करना और किसी को चोट पहुँचाना नहीं है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में परदु:खकातरता, संवेदनशीलता और कर्तव्य परायणता की भावना जगाना है।

ऐसा कभी नहीं हुआ था।

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे, पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर पर देख रहे थे। गलती पकड़ नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने खोजकर रजिस्टर इतने जोर से बन्द किया कि मक्खी चपेट में आ गई। उसे निकालते हुए वे बोले - ''महाराज! रिकार्ड सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।''

धर्मराज ने पूछा, ''और वह दूत कहाँ है?''

''महाराज! वह भी लापता है।''

उसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बड़ा बदहवास वहाँ आया । उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे, ''अरे, तू कहाँ रहा इतने दिन ? भोलाराम का जीव कहाँ है?''

यमदूत हाथ जोड़कर बोला, ''दयानिधान! मैं कैसे बतलाऊँ

की कहानी', 'तट की खोज' आदि व्यंग्य रचनाएँ हैं। अब आपकी समग्र रचनावली भी प्रकाशित हो चुकी है।

परसाई जी की भाषा में जिन्दादिली व फक्कड़पन है। इसमें लोक प्रचलित भाषा के नपे-तुले चुभते, हास्यपूर्ण शब्द हैं, जो पाठक के हृदय को भेदते हैं और गुदगुदाते भी हैं। इनकी रचनाओं में हास्य की मस्ती व सरलता है वहीं पैनापन भी है। इनकी भाषा लोकपरक है। शब्द का प्रयोग प्रभावी एवं सटीक है।

परसाई जी ने अपने लेखन में सामाजिक विसंगतियों पर अपनी तीखी कलम से कठोर प्रहार किए हैं। हास्य व्यंग्य के द्वारा भ्रष्टाचार, मानसिक दुर्बलता, राजनीति व अनीतियाँ हों या रिश्वतखोरी सब पर करारी चोट करने से वे चूके नहीं हैं। आपके पैने व्यंग्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

कि क्या हो गया? आज तक मैने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह को त्यागा, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरंभ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु-तरंग पर सवार हुआ त्यों ही वह मेरे चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।''

धर्मराज क्रोध से बोले – ''मूर्ख! जीवों को लाते-लाते बूढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।''

दूत ने सिर झुकाकर कहा-''महाराज, मेरी सावधानी में बिल्कुल कसर नही थी। मेरे इन अभ्यस्थ हाथों से अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छूट सके। पर इस बार तो कोई इन्द्रजाल ही हो गया।''

चित्रगुप्त ने कहा –''महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे के डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है, राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बन्द कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी दल ने मरने के बाद दुर्गति के लिए तो नहीं उड़ा दिया?''

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा कि ''तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गई । भला भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना-देना?''

इसी समय कहीं से घूमते – घामते नारद मुनि वहाँ आ गए। धर्मराज को गुमसुम बैठे देख बोले, ''क्यों धर्मराज, कैसे चिन्तित बैठे हैं? क्या नरक में निवास स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई ?''

धर्मराज ने कहा, ''वह समस्या तो कभी की हल हो गई। नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गये हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाई। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गई, पर एक बड़ी विकट उलझन आ गई है। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।''

नारद ने पूछा– ''उस पर इन्कम टैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।''

चित्रगुप्त ने कहा – ''इनकम होती तो टैक्स होता। भुखमरा था।''

नारद बोले – ''मामला बड़ा दिलचस्प है। अच्छा मुझे उसका नाम, पता तो बताओ। मैं पृथ्वी पर जाता हूँ ''

चित्रगुप्त ने रजिस्टर खोलकर बताया – ''भोलाराम नाम था उसका। जबलपुर शहर में घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक-डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार समेत रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के एक लड़की। उम्र लगभग साठ साल। सरकारी नौकर था। पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया, इसलिए मकान – मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत संभव है कि अगर मकान-मालिक वास्तविक मकान-मालिक है तो उसने भोलाराम के मरते ही, उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफी घूमना पड़ेगा।''

माँ-बेटी के सम्मिलित क्रन्दन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गए।

द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज लगाई, ''नारायन! नारायन!''

लड़की ने देखकर कहा – आगे जाओ महाराज!''

नारद ने कहा, ''मुझे भिक्षा नहीं चाहिए, मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ को जरा बाहर भेजो, बेटी''

भोलाराम की पत्नी बाहर आयी। नारद ने कहा-''माता, भोलाराम को क्या बीमारी थी?''

''क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी थी पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे, पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से यही जवाब मिलता ''विचार हो रहा है।'' इन पाँच सालों में सब गहने बेचकर हम लोग खा गए। फिर बर्तन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फाके होने लगे थे। चिन्ता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया। ''

नारद ने कहा – ''क्या करोगी माँ ? उनकी इतनी ही उम्र थी।''

''ऐसा तो मत कहो, महाराज? उम्र तो बहुत थी। पचास – साठ रुपया महीना पेंशन मिलती तो कुछ और काम कहीं से करके गुजारा हो जाता। पर क्या करें? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गए और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।''

दु:ख की कथा सुनने की फुरसत नारद को थी नहीं। वे अपने मुद्दे पर आए, ''माँ, यह तो बताओ कि यहाँ किसी का उनसे विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो?''

पत्नी बोली – ''लगाव तो महाराज, बाल-बच्चों से होता है।''

''नहीं परिवार के बाहर भी हो सकता है। मेरा मतलब है, किसी स्त्री ''

स्त्री ने गुर्राकर नारद की ओर देखा। बोली- ''हर कुछ मत बको महाराज, तुम साधु हो। जिन्दगी- भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री को आँख उठाकर नहीं देखा।''

नारद हँसकर बोले- ''हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही हर अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा , माता मैं चला।''

स्त्री ने कहा- ''महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाए। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाए।''

नारद को दया आ गई थी। वे कहने लगे – ''साधुओं की बात कौन मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं । फिर भी मैं सरकारी दफ्तर में जाऊँगा और कोशिश करूँगा।''

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ्तर पहुँचे। वहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के केस के बारे में बातें कीं। उस बाबू ने उन्हे ध्यानपूर्वक देखा और बोला– ''भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजीं थीं, पर वजन नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।''

नारद ने कहा– ''भई! ये बहुत से 'पेपर –वेट' तो रखे हैं । इन्हें क्यों नहीं रख दिया।''

बाबू हँसा– ''आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती । दरख्वास्तें 'पेपर–वेट' से नहीं दबती। खैर आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।''

नारद उस बाबू के पास गए। उसने तीसरे बाबू के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवे के पास। जब नारद पच्चीस–तीस बाबुओं और अफसरों के पास घूम आए तब एक चपरासी ने कहा– ''महाराज ! आप क्यों इस झंझट में पड़ गए। आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया, तो आपका अभी काम हो जाएगा।''

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। बिना 'विज़िटिंग कार्ड' के आया देख, साहब बड़े नाराज हुए। बोले–इसे कोई मन्दिर–वन्दिर समझ लिया है क्या? धड़धड़ाते चले आए। चिट क्यों नहीं भेजी?''

नारद ने कहा – ''कैसे भेजता? चपरासी सो रहा है।''

''क्या काम है?'' साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेंशन – केस बतलाया।

साहब बोले, ''आप हैं बैरागी ! दफ्तरों के रीति रिवाज नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की । भई, यह भी एक मन्दिर है। यहाँ भी दान पुण्य करना पड़ता है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं, उन पर वजन रखिए।''

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वजन की समस्या खड़ी हो गई । साहब बोले – ''भई, सरकारी पैसे का मामला है पेंशन का केस बीसों दफ्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। जितनी पेंशन मिलती है, उतनी ही स्टेशनरी लग जाती है, हाँ जल्दी भी हो सकता है, मगर .....'' साहब रुके।

नारद ने कहा– ''मगर क्या?''

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा – ''मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा है, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना बजाना सीखती है। यह मैं उसे दूँगा। साधु–संतों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं।''

नारद अपनी वीणा छिनते देख जरा घबराए। पर फिर संभलकर उन्होंने वीणा टेबल पर रखकर कहा– ''यह लीजिए। अब जरा जल्दी उसकी पेंशन का आर्डर निकाल दीजिए।''

साहब ने प्रसन्नता से उन्हे कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घण्टी बजाई । चपरासी हाजिर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया – ''बडे बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ।''

थोडी ही देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ–डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागजात भी थे साहब ने फाइल पर नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा–''क्या नाम बताया साधु जी आपने ? ''

नारद समझे कि साहब कुछ ऊँचा सुनते हैं इसलिए जोर से बोले –''भोलाराम !''

सहसा फाइल में से आवाज आई, ''कौन पुकार रहा है मुझे ? पोस्टमैन है? क्या पेंशन का आर्डर आ गया?''

नारद ने कहा–''मैं नारद हूँ मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग में तुम्हारा इन्तजार हो रहा है।''

आवाज आई –''मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता''।

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. यमदूत को किसने चकमा दिया था?
2. भोलाराम का जीव ढूँढने के लिए धरती पर कौन गया?
3. भोलाराम की स्त्री ने नारद जी से क्या प्रार्थना की?
4. भोलाराम के मरने का क्या कारण था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भोलाराम की जीवात्मा कहाँ अटकी थी, वह स्वर्ग क्यों नहीं जाना चाहता था?
2. साहब ने नारद जी की वीणा क्यों माँगी?
3. ''भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं उन पर 'वजन' रखिए'' वाक्य में वजन शब्द किसकी ओर संकेत कर रहा है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भोलाराम के रिटायर होने के बाद उसे और उसके परिवार को किन परेशानियों का सामना करना पड़ा?
2. धर्मराज के अनुसार नरक की आवास समस्या किस प्रकार हल हुई?
3. अगर मकान मालिक वास्तव में मकान मालिक है तो उसने भोलाराम के मरते ही उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इस वाक्य में निहित व्यंग्यार्थ को स्पष्ट कीजिए।
4. साहब ने भोलाराम की पेंशन में देर होने की क्या वजह बताई?
5. लेखक ने इस व्यंग्य के माध्यम से किन अव्यवस्थाओं पर चोट की है?
6. इन गद्यांशों की संदर्भ एवं प्रसंगों सहित व्याख्या कीजिए –
   (1) आप हैं बैरागी..... करना पड़ता है
   (2) धर्मराज क्रोध .....इन्द्रजाल हो गया।
7. इन पंक्तियों का भाव पल्लवन कीजिए–
   (1) साधुओं की बात कौन मानता है?
   (2) गरीबी भी एक बीमारी है।
   (3) साधु-संतों की वीणा से तो ओर भी अच्छे स्वर निकलते हैं ।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के लिए मानक शब्द लिखिए –

   ओवरसियर, गुमसुम, इन्कम टैक्स, दफ्तर, हाजिरी आखिर, इमारत, बकाया, काफी, रिटायर।

2. निम्नलिखित मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

   चकमा देना, चंगुल से छूटना, उड़ा देना, पैसा हड़पना, वजन रखना ।

3. इस पाठ में से योजक चिह्न वाले विशेषण और क्रिया के द्विरूक्ति शब्द छाँटकर लिखिए।

4. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए –

   (क) धोखा नहीं खाई थी आज तक मैने।

   (ख) रास्ता मैं कट जाता है डिब्बे के डिब्बे मालगाड़ी के ।

   (ग) आ गई उम्र तुम्हारी रिटायर होने की।

   (घ) फाइल लाओ केस की भोलाराम बड़े बाबू से।

और भी जानिए :-

आप अभी तक कुछ विराम चिह्नों के विषय में जान चुके हैं। अब यहाँ कुछ और भी विराम चिह्नों के विषय में जानिए–

पूर्ण विराम - (।)

पूर्ण विराम का प्रयोग किसी कथन के पूर्ण होने पर किया जाता है। जैसे –

(अ) कथन की पूर्णता – राम पुस्तक पढ़ता है।

(ब) अप्रत्यक्ष प्रश्न – मैं क्या बताऊँ कि तुम क्या चाहते हो।

(स) कविता के चरण के अंत में –

सुनी जननि सोई सुत बड़भागी।

जो पितुमातु वचन अनुरागी ॥

निर्देशक चिह्न (-)

इस चिह्न का प्रयोग आगे आने वाले विवरण को संकेतिक करने के लिए तथा संवादों में भी करते हैं।

जैसे– संज्ञा के तीन भेद हैं – व्यक्तिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा और जातिवाचक संज्ञा।

सीता– कहिए आपके क्या हाल हैं ?

राम– ठीक हूँ।

अवतरण चिह्न (‘‘ ’’/ ‘ ’)

इसे उद्धरण चिह्न भी कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है

(1) (किसी के द्वारा कहे गए कथन या महापुरुष की वाणी को उद्धृत करते समय दोहरे (‘‘ ’’) अवतरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है)जैसे– ‘‘मैं नारद हूँ तुम्हें लेने आया हूँ।’’

(2) किसी व्यक्ति का नाम , पुस्तक का नाम इकहरे अवतरण चिह्न (‘ ,) में लिखा जाता है। जैसे – छायावाद के प्रमुख चार कवि हैं– ‘प्रसाद’, ‘निराला’,‘पंत’ और महादेवी वर्मा ।

5 निम्नलिखित अनुच्छेद में पूर्ण विराम, निर्देशक चिह्न तथा अवतरण चिह्न आदि का यथा स्थान प्रयोग कीजिए।

बाबू हँसा आप साधु हैं आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती दरख्वास्तें पेपर से नहीं दबती खैर आप इस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।

योग्यता विस्तार

1. हरिशंकर परसाई की अन्य रचनाएँ खोजकर पढ़िए ।
2. यह व्यंग्य आपको कैसा लगा? कक्षा में चर्चा कीजिए ।
3. यदि भोलाराम के स्थान पर आप होते, तो आप अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करते?
4. वर्तमान प्रशासकीय व्यवस्था पर अपना मत व्यक्त कीजिए।
5. प्रस्तुत व्यंग्य को एकांकी में परिवर्तित कर किसी अवसर पर अभिनय कीजिए।

***